Maan Baap Ke Muta'alliq Waqi'aat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 305
Weekly Booklet : 305

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की

एक क़िस्त बनाम

मां बाप

के मुतअ़ल्लिक़ वाक़िआ़त

सफ़हात 25

मां की दुआ़ से बेटे को कलिमा नसीब हो गया 04
मां को तन्हा छोड़ने वाले की इब्रत नाक मौत 06
नज़्अ़ में ख़ौफ़नाक चीख़ें मारने वाला नौ जवान 09
ओल्ड हाउस और एक लाचार बुढ़िया 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**मां बाप के मुतअ़ल्लिक़ वाक़ेआ़त**
सिने त़बाअ़त	:	शव्वालुल मुकर्रम **1444** हि., मई **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

मां बाप के मुतअ़ल्लिक़ वाक़ेआ़त

येह रिसाला (**मां बाप के मुतअ़ल्लिक़ वाक़ेआ़त**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत़्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

येह मज़्मून किताब "नेकी की दा'वत" के सफ़हा 430 ता 449 से लिया गया है।

मां बाप के मुतअ़ल्लिक़ वाक़ेआ़त

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़ह़ात का रिसाला **"मां बाप के मुतअ़ल्लिक़ वाक़ेआ़त"** पढ़ या सुन ले उसे अपने मां बाप का फ़रमां बरदार व ख़िदमत गुज़ार बना और उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन, मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब किसी मस्जिद के पास से गुज़रो तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो। (فضل الصلاۃ علی النبی للقاضی الجہضمی، ص70، رقم:80)

वालिदैन का फ़रमां बरदार बन गया

ना फ़रमानियों पर नदामत के आंसू बहाने गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा पाने, ख़ुद को नेकियों का ह़रीस बनाने, अपने वुजूद को सुन्नतों से सजाने और अपने दिल में शम्ए इ़श्क़े रसूल जलाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की

पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आ'माल के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "जाएज़ा" कर के नेक आ'माल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **मदनी बहार** सुनाऊं, एक इस्लामी भाई (उ़म्र : तक़रीबन 20 साल) के बयान का लुब्बे लुबाब है : वोह ग़ालिबन 2009 ई. में मिडल का इम्तिह़ान देने के बा'द छुट्टियां गुज़ारने घर आए हुए थे। एक रोज़ सब्ज़ी ख़रीदने निकले तो रास्ते में चन्द इमामा शरीफ़ का ताज पहने आ़शिक़ाने रसूल से आमना सामना हो गया, उन्हों ने पुर तपाक अन्दाज़ में मुलाक़ात फ़रमाई और **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए कुछ ऐसे दिलरुबा अन्दाज़ में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की, कि हां कहते ही बनी। जब तै शुदा वक़्त पर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में जाने के लिये वोह इस्लामी भाइयों के पास पहुंचे तो उन्हों ने बड़ी शफ़्क़त फ़रमाई और निहायत अदबो एह़तिराम से उन्हें गाड़ी में बिठाया। اَلْحَمْدُلِلّٰه फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में ज़िन्दगी की पहली बार ह़ाज़िरी से मुशर्रफ़ हुए। वहां की पुरसोज़ ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरे बयान, ज़िक्रुल्लाह और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने उन की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब

बरपा कर दिया बिल ख़ुसूस दुआ़ के दौरान ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स उन की आंखों से आसूंओं के धारे बह निकले, उन्हों ने गुनाहों से तौबा की और इज्तिमाअ़ से वापसी के बा'द से नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, कुछ ही अ़र्से बा'द दाढ़ी शरीफ़ रख ली और इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया, वोह इन्तिहाई बद ज़बान और बे अदब इन्सान थे, मां बाप के सामने चीख़ते चिल्लाते और उन की तौहीन किया करते थे अब वालिदैन के मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार बन चुके थे और उन के हाथ पांव चूमने लगे थे। उन की इस मुस्बत तब्दीली पर न सिर्फ़ घर वाले बल्कि सारा ही ख़ानदान ह़ैरान था। दीनी माह़ोल से वाबस्तगी से पहले उन्हें एक बीमारी थी जिस के बाइ़स काफ़ी परेशानी रहती थी, **अल्लाह** पाक ने उन्हें इस मरज़ से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी, उन का ह़ुस्ने ज़न है कि येह सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की बरकत थी। येह मदनी बहार देख कर उन की वालिदा ने उन्हें हुक्म दिया कि तुम्हारे छोटे भाई को गुर्दों की तक्लीफ़ है, तुम दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले "63 दिन के मदनी कोर्स" में शामिल हो कर अपने भाई की शिफ़ा के लिये दुआ़ करो। वोह हुक्म की ता'मील में मदनी कोर्स के लिये तक़रीबन 2010 ई. में फ़ैज़ाने मदीना जा पहुंचे और वहां न सिर्फ़ भाई के लिये ख़ुद दुआ़एं मांगीं बल्कि दीगर आ़शिक़ाने रसूल को भी दुआ़ के लिये कहा करते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه अभी उन्हें मदनी कोर्स में दो ही हफ़्ते हुए थे कि उन के भाई की त़बीअ़त बह़ाल होने लगी ह़ालां कि इस के लिये डॉक्टर ऑपरेशन का कह चुके थे। जब दोबारा चेकअप हुवा तो डॉक्टर्ज़ ह़ैरान रह गए और कहने लगे कि अब ऑपरेशन की ज़रूरत नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन का भाई रू ब सिह़्ह़त हो चुका था।

हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई — है बेहद महब्बत भरा दीनी माहोल
ऐ बीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर — गुनाहों की देगा दवा दीनी माहोल
शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी — यक़ीनन है बरकत भरा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मज़्कूरा मदनी बहार के ज़िम्न में नेकी की दा'वत के मदनी फूल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल की बरकत से वालिदैन का ना फ़रमान व गुस्ताख़ राहे रास्त पर आ गया। यक़ीनन बड़ा बख़्त बेदार है वोह इन्सान जिस के मां बाप उस से राज़ी रहें ख़ुदा की क़सम ! वोह शख़्स निहायत बद नसीब है जो अपने वालिदैन को बिला इजाज़ते शर्ई नाराज़ रखे और चूंकि आज हर त़रफ़ मां बाप की ना फ़रमानियों और दिल आज़ारियों का तूफ़ान है लिहाज़ा पेश कर्दा **मदनी बहार** के ज़िम्न में मां बाप की ख़ुशनूदी के समरात और नाराज़ी की वईदात के मुतअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत के कुछ **मदनी फूल** पेश किये जाते हैं। सब से पहले अपने बेटे से **महब्बत** करने वाली मां की दुआ़ की ईमान अफ़रोज़ **ह़िकायत** सुनिये और झूमिये :

मां की दुआ़ से बेटे को कलिमा नसीब हो गया

एक डॉक्टर का बयान है : एक शख़्स को दिल का शदीद दौरा पड़ा, बचने की उम्मीद न थी, उस की मां बिछोने के पास बैठी दुआ़ कर रही थी जो ह़ाज़िरीन ने सुनी : "**या अल्लाह** पाक ! मैं अपने बेटे से राज़ी हूं तू भी राज़ी हो जा।" डॉक्टर्ज़ इलाज में मश्ग़ूल थे और मोह़तरमा दुआ़ में लगी हुई थीं। जब आख़िरी वक़्त आया, मरीज़ ने बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा, होंटों पर तबस्सुम फैल गया और रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई।

मरते वक़्त कलिमा पढ़ने वाला जन्नती है

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! जिस मुसल्मान की मां आख़िरी वक़्त उस से ख़ुश हो उस की भी क्या शान है ! और जिस को आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो जाए ख़ुदा की क़सम ! वोह बड़ा ही ख़ुश नसीब है । चुनान्चे **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "مَنْ كَانَ آخِرُ كَلَامِهٖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ या'नी जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हो, वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (ابوداؤد،3/255،حدیث:3116)

कलिमा पढ़ने वाले की ह़िकायत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : मलकुल मौत (عَلَیْہِ السَّلَام) एक मरने वाले शख़्स के पास आए तो इस के दिल को देखा लेकिन कोई अ़मले ख़ैर (या'नी अच्छा अ़मल) न पाया, फिर उस के जबड़ों को खोला तो ज़बान के कनारे को तालू से मिला हुवा देखा और वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कह रहा था तो इस कलिमे की वज्ह से उस की मग़्फ़िरत हो गई । (المحتضرین مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا،5/304،رقم:9)

जब दमे वापसीं हो या अल्लाह लब पे हो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه
हैं मुह़म्मद मेरे रसूले ख़ुदा मरह़बा मरह़बा रसूलुल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

मक़्बूल ह़ज का सवाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन मां बाप का दरजा बहुत बुलन्दो बाला है, उन की दुआ़एं औलाद के ह़क़ में मक़्बूल होती हैं, बस उन्हें ख़ुश रखिये, ख़ूब ख़िदमत कर के उन की दुआ़एं लीजिये । उन की ख़ुशी ईमान की सलामती और उन की नाराज़ी ईमान की बरबादी का बाइ़स हो सकती है । मां बाप का फ़रमां बरदार सदा फला फूला और शादो आबाद

रहता है, दुन्या में जहां कहीं रहे अपने मां बाप की दुआ़ओं का फ़ैज़ उठाता है। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले, "समुन्दरी गुम्बद" (32 सफ़हात) सफ़हा 6 ता 7 पर है : ख़ूब हमदर्दी और प्यार व महब्बत से मां बाप का दीदार कीजिये, मां बाप की त़रफ़ ब नज़रे रह़मत देखने के भी क्या कहने ! सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जब औलाद अपने मां बाप की त़रफ़ रह़मत की नज़र करे तो **अल्लाह** पाक उस के लिये हर नज़र के बदले **ह़ज्जे मबरूर** (या'नी मक़्बूल ह़ज) का सवाब लिखता है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर्चे दिन में **सो मरतबा** नज़र करे ! फ़रमाया : نَعَمْ،اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَطْيَبُ या'नी "हां, **अल्लाह** पाक सब से बड़ा है और अत़्यब (या'नी सब से ज़ियादा पाक) है।" (شعب الایمان،6/186،حدیث:7856) यक़ीनन **अल्लाह** पाक हर शै पर क़ादिर है, वोह जिस क़दर चाहे दे सकता है, हरगिज़ आ़जिज़ नहीं लिहाज़ा अगर कोई अपने मां बाप की त़रफ़ रोज़ाना 100 तो क्या एक हज़ार बार भी रह़मत की नज़र करे तो वोह उसे एक हज़ार मक़्बूल ह़ज का सवाब इनायत फ़रमाएगा।

मश्ग़ूल जो रहता है, मां बाप की ख़िदमत में — अल्लाह की रह़मत से, जाता है वोह जन्नत में
मां बाप को ईज़ा जो देता है शरारत से — जाता है वोह दोज़ख़ में आ'माल की शामत से

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मां को तन्हा छोड़ देने वाले की इ़ब्रत नाक मौत

एक शख़्स की मां सख़्त बीमार, मौत के बिछोने पर पड़ी थी, इस के बा वुजूद नालाइक़ बेटे ने उस के साथ बद तमीज़ी की और बेचारी को तन्हा छोड़ दिया और वोह ग़रीब इसी ह़ालते तन्हाई में इन्तिक़ाल कर गई। वक़्त गुज़रता गया। 30 साल बा'द उस "नालाइक़ बेटे" को दस्त लग गए

और निहायत कमज़ोर हो गया। हाथों का किया यूं आड़े आया कि रो रो कर कहता सुना गया : "मेरे तीन बेटे हैं मगर मेरी बिल्कुल परवा नहीं करते, मैं कई रोज़ से बीमार पड़ा हूं मगर एक बार भी मिलने नहीं आए।" आख़िर कार वोह अपनी मां की त़रह़ रात को अकेला मर गया। सुब्ह़ मह़ल्ले वालों ने देखा कि अकेली लाश पर च्यूंटियां इकठ्ठी हो चुकी थीं और उस को काट रही थीं।

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का   वरना है इस में ख़सारा आप का

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि मां बाप को सताने वाला दुन्या में भी सज़ा पाता है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : सब गुनाहों की सज़ा **अल्लाह** पाक चाहे तो क़ियामत के लिये उठा रखता है मगर मां बाप की ना फ़रमानी की सज़ा जीते जी पहुंचाता है। (مستدرک،5/216،حدیث:7345)

वाक़ेई वोह शख़्स बड़ा ख़ुश नसीब है जो मां बाप को ख़ुश रखता है, जो बद नसीब मां बाप को नाराज़ करता है उस के लिये बरबादी है। **अल्लाह** पाक पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 23 ता 25 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا(۲۳) وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًاؕ(۲۴) رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِیْ نُفُوْسِكُمْؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने इन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो इन से "हूं" (उफ़)

न कहना और इन्हें न झिड़कना और इन से ता'ज़ीम की बात कहना और इन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रह़्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन में पाला। तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है।

बचपन में मां भी तो औलाद की गन्दगी बरदाश्त करती है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **मुनदरजए** बाला आयते करीमा में **अल्लाह** पाक ने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया है और खु़सूसन उन के बुढ़ापे में ज़ियादा ख़िदमत की ताकीद फ़रमाई है। यक़ीनन मां बाप का बुढ़ापा इन्सान को इम्तिह़ान में डाल देता है, बसा अवक़ात सख़्त बुढ़ापे में अक्सर बिस्तर ही पर बोल व बराज़ (या'नी गन्दगी) की तरकीब होती है जिस की वज्ह से उ़मूमन औलाद बेज़ार हो जाती है। मगर याद रखिये ! ऐसे ह़ालात में भी मां बाप की ख़िदमत लाज़िमी है। बचपन में मां भी तो बच्चे की गन्दगी बरदाश्त करती है। बुढ़ापे और बीमारियों के बाइ़स मां बाप के अन्दर ख़्वाह कितना ही चिड़चिड़ा पन आ जाए, सठिया जाएं, बिला वज्ह लड़ें, चाहे कितना ही झगड़ें और परेशान करें, **सब्र, सब्र** और **सब्र** ही करना और उन की ता'ज़ीम बजा लाना ज़रूरी है। उन से बद तमीज़ी करना, उन को झाड़ना वग़ैरा दर कनार उन के आगे "उफ़" तक नहीं करना है, वरना बाज़ी हाथ से निकल सकती और दोनों जहानों की तबाही मुक़द्दर बन सकती है कि वालिदैन का दिल दुखाने वाला इस दुन्या में भी ज़लीलो ख़्वार होता है और आख़िरत में भी अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है।

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का   वरना है इस में ख़सारा आप का

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

नज़्अ़ में ख़ौफ़नाक चीख़ें मारने वाला नौ जवान

एक नौ जवान के गुर्दे फ़ेल हो गए, अस्पताल में दाख़िल कर दिया गया, ह़ालत निहायत ख़राब थी, नज़्अ़ (या'नी रूह़ निकलने का अ़मल) त़ारी हुवा, उस के मुंह और नाक से दर्दनाक आवाज़ें निकलती थीं, चेहरा नीला हो जाता और आंखें बाहर उबल पड़ती थीं, इस कैफ़िय्यत में दो दिन गुज़र गए। इन दर्दनाक आवाज़ों ने ख़ौफ़नाक चीख़ों का रूप धार लिया था, वॉर्ड (ward) के मरीज़ भागने शुरूअ़ हो गए, लिहाज़ा उसे वॉर्ड से दूर एक कमरे में मुन्तक़िल कर दिया गया, उस के बाप ने डॉक्टर से कहा : इसे ज़हर का टीका लगा दो ताकि येह मर जाए, हम से इस की ह़ालत देखी नहीं जाती। जब पूछा गया कि आख़िर इस की येह अ़जीबो ग़रीब ह़ालत क्यूं है ? बाप बेज़ारी के साथ बोल उठा : येह शख़्स अपनी बीवी को ख़ुश करने के लिये मां को मारता था और मैं इस को रोका करता था, ऐसा लगता है अब इस की सज़ा मिल रही है ! कुल तीन दिन नज़्अ़ की शदीद तक्लीफ़ों में मुब्तला रहने के बा'द उस ने दम तोड़ा।

मां को जवाब न देने वाला गूंगा हो गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम **अल्लाहु तव्वाब** की जनाब में तौबा करते और उस से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं। आह ! मां बाप की दिल आज़ारी किस क़दर रुस्वाई और दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइ़स है। मां बाप का बहुत ख़याल रखना चाहिये कि जैसे ही पुकारें सारे काम छोड़ कर जी अम्मी, जी अब्बू कहते हुए उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाना चाहिये, मन्क़ूल है : एक शख़्स को उस की मां ने आवाज़ दी लेकिन उस ने जवाब न दिया इस पर उस की मां ने उसे बद दुआ़ दी तो वोह गूंगा हो गया।

(برالوالدین للطرطوشی، ص79)

मां बाप के ना फ़रमान की इ़बादतें ना मक़्बूल

अपने बाप के ना फ़रमान के मुतअ़ल्लिक़ किये गए एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बाप की ना फ़रमानी **अल्लाह** जब्बार व क़ह्हार की ना फ़रमानी है और बाप की नाराज़ी **अल्लाह** जब्बार व क़ह्हार की नाराज़ी है, आदमी मां बाप को राज़ी करे तो वोह उस के **जन्नत** हैं और नाराज़ करे तो वोही उस के दोज़ख़ हैं। जब तक बाप को राज़ी न करेगा, उस का कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, कोई नेक अ़मल अस्लन (या'नी हरगिज़) क़बूल नहीं, अ़ज़ाबे आख़िरत के इ़लावा दुन्या में ही जीते जी सख़्त बला (या'नी शदीद आफ़त) नाज़िल होगी, मरते वक़्त مَعَاذَ الله कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 24/384, 385)

गधा नुमा इन्सान का मुर्दा

ह़ज़रते अ़व्वाम बिन हौशब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (जो कि तब्ए़ ताबेई बुज़ुर्ग गुज़रे हैं और उन्हों ने 148 हि. में वफ़ात पाई) फ़रमाते हैं : मैं एक मर्तबा किसी मह़ल्ले से गुज़रा, उस के कनारे पर क़ब्रिस्तान था, बा'दे अ़स्र एक क़ब्र शक़ हुई (या'नी फटी) और उस में से एक ऐसा आदमी निकला जिस का सर गधे जैसा और बाक़ी जिस्म इन्सान का था, वोह तीन बार गधे की त़रह़ रेंका (या'नी चीख़ा), फिर क़ब्र में चला गया और क़ब्र बन्द हो गई। एक बड़ी बी बैठी (सूत) कात रही थीं, एक ख़ातून ने मुझ से कहा : बड़ी बी को देख रहे हो ? मैं ने कहा : इस का क्या मुआ़मला है ? कहा : येह क़ब्र वाले की मां है, वोह शराबी था, जब शाम को घर आता, मां नसीह़त करती कि ऐ बेटे ! **अल्लाह** पाक से डर, आख़िर कब तक इस नापाक को पियेगा ! येह

जवाब देता : तू गधे की त़रह़ रेंकती है । इस शख़्स का अ़स्र के बा'द इन्तिक़ाल हुवा, जब से फ़ौत हुवा है हर रोज़ बा'दे अ़स्र इस की क़ब्र शक़ होती है और यूं तीन बार गधे की त़रह़ चिल्ला कर फिर क़ब्र में समा जाता है और क़ब्र बन्द हो जाती है । (الترغیب والترہیب للمنذری،3/267،حدیث:3833)

दिल न तू मां बाप का हरगिज़ दुखा हो कहीं न ख़ातिमा तेरा बुरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मां के गुस्ताख़ को ज़मीन ज़िन्दा निगल गई !

किसी गांव मे एक किसान के घर के अन्दर सास बहू के दरमियान हमेशा ठनी रहती थी, कई बार किसान की बीवी रूठ कर मयके चली गई और वोह मिन्नत समाजत कर के उस को ले आया । आख़िरी बार बीवी ने किसान से कह दिया कि अब इस घर के अन्दर मैं रहूंगी या तुम्हारी मां । किसान अपनी बीवी पर लट्टू था, इस नादान ने दिल ही दिल में तै कर लिया कि रोज़ रोज़ के झगड़े का ह़ल येही है कि मां को रास्ते से हटा दिया जाए । चुनान्चे एक बार वोह किसी ह़ीले से मां को अपने गन्ने के खेत में ले गया, गन्ने काटते काटते मौक़अ़ पा कर मां का रुख़ कर के जूं ही उस पर कुल्हाड़ी का वार करना चाहा एक दम ज़मीन ने उस किसान के पांव पकड़ लिये, कुल्हाड़ी हाथ से छूट कर दूर जा पड़ी और मां घबरा कर चिल्लाती हुई गांव की त़रफ़ भाग निकली । ज़मीन ने आहिस्ता आहिस्ता किसान को निगलना शुरूअ़ कर दिया, वोह घबरा कर चीख़ता रहा और अपनी मां को पुकार पुकार कर मुआ़फ़ी मांगता रहा लेकिन मां बहुत दूर जा चुकी थी, कुछ देर बा'द जब लोग वहां पहुंचे तो वोह छाती तक ज़मीन में

धंस चुका था, लोग उसे निकलने की नाकाम कोशिशें करते रहे मगर ज़मीन उसे निगलती ही रही यहां तक कि वोह ज़मीन के अन्दर समा गया।

जहां में हैं इब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मह़ल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

तौबा ! तौबा !!

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तौबा ! तौबा !! लरज़ उठो !!! और अगर मां बाप को कभी नाराज़ किया है तो जल्दी जल्दी उन के क़दमों में गिर कर रो रो कर उन से मुआ़फ़ी की भीक मांग लो, येह तो दुन्या की सज़ा थी जो उस मां के ना फ़रमान नादान किसान की देखी गई अगर वोह किसान मुसल्मान था तो हम ख़ुदाए रह़मान से उस के लिये रह़मो करम की दरख़्वास्त करते हैं। दुन्या की सज़ा जब ना क़ाबिले बरदाश्त हुवा करती है तो आख़िरत की सज़ा कैसे सही जा सकेगी ! ख़ुदा की क़सम ! मां बाप के ना फ़रमानों को मरने के बा'द मिलने वाली सज़ा दुन्यवी सज़ा के मुक़ाबले में करोड़हा करोड़ गुना ज़ियादा ख़ौफ़नाक होगी। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले, "समुन्दरी गुम्बद" (32 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 20 ता 21 से तीन रिवायात मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

आग की शाख़ों से लटकने वाले

ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : मे'राज की रात मैं ने कुछ लोग देखे जो आग की शाख़ों से लटके हुए थे तो मैं ने पूछा : ऐ जिब्रईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की :

اَلَّذِیْنَ یَشْتُمُوْنَ اٰبَاءَھُمْ وَاُمَّھَاتِھِمْ فِی الدُّنْیَا या'नी येह वोह लोग हैं जो दुन्या में अपने बापों और मांओं को बुरा भला कहते थे। (الزواجر، 2/139)

बारिश के क़त्रों जितने अंगारे

मन्क़ूल है : जिस ने अपने वालिदैन को गाली दी उस की **क़ब्र** में आग के इतने **अंगारे** उतरते हैं जितने (बारिश के) क़त्रे आस्मान से ज़मीन पर आते हैं। (الزواجر، 2/140)

क़ब्र पस्लियां तोड़ देती है

मन्क़ूल है : जब मां बाप के ना फ़रमान को दफ़्न किया जाता है तो **क़ब्र** उसे दबाती है यहां तक कि उस की पस्लियां (टूट फूट कर) एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। (الزواجر، 2/140)

पांव पकड़ कर मां बाप से मुआ़फ़ी मांग लीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप के **मां बाप** या इन में से कोई एक नाराज़ है तो फ़ौरन से पेशतर हाथ जोड़ कर, पांव पकड़ कर और रो रो कर मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब फ़रमा लीजिये, उन के जाइज़ मुत़ालबात पूरे कर दीजिये और **अल्लाह** पाक की जनाब में भी गिड़गिड़ा कर तौबा कर लीजिये कि इसी में दोनों जहानों की भलाई है। वालिदैन के हुक़ूक़ की मज़ीद मा'लूमात के लिये दो अ़दद (1) "**मां बाप के हुक़ूक़**" और (2) ए'तिकाफ़े **रमज़ानुल मुबारक** (1430 हि.) में होने वाले "मदनी मुज़ाकरे" की वीडियो बनाम "**वालिदैन के ना फ़रमानों का अन्जाम**" मुलाहज़ा कीजिये।

मां की बद दुआ़ से टांग कट गई

वाक़ेई मां बाप के हुक़ूक़ से ओ़हदा बर आ होना निहायत दुश्वार है, इस के लिये उ़म्र भर कोशां रहना होगा और **मां बाप** की नाराज़ी से

हमेशा बचना होगा। जो लोग **मां बाप** को सताते हैं उन का दुन्या में भी भयानक अन्जाम होता है चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा कमालुद्दीन दमैरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ नक़्ल करते हैं : "**ज़मख़्शरी**" (जो कि मो'तज़िली फ़िर्क़े का एक मश्हूर आ़लिम गुज़रा है उस) की एक **टांग कटी हुई** थी, लोगों के पूछने पर उस ने इन्किशाफ़ किया कि येह मेरी **मां की बद दुआ़** का नतीजा है, क़िस्सा यूं हुवा कि मैं ने बचपन में एक **चिड़िया** पकड़ी और उस की टांग में डोरी बांध दी, इत्तिफ़ाक़ से वोह मेरे हाथ से छूट कर उड़ते उड़ते एक दीवार की दराड़ में घुस गई, मगर डोरी बाहर ही लटक रही थी, मैं ने डोरी पकड़ कर बे दर्दी से खींची तो **चिड़िया** फड़कती हुई बाहर निकल पड़ी, मगर बेचारी की **टांग** डोरी से कट चुकी थी, **मेरी मां** ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो सदमे से तड़प उठी और उस के मुंह से मेरे लिये येह **बद दुआ़** निकल गई : "जिस त़रह़ तू ने इस बे ज़बान की टांग काट डाली, **अल्लाह** पाक तेरी टांग काटे।" बात आई गई हो गई, कुछ अ़र्से के बा'द तह़सीले इ़ल्म के लिये मैं ने "बुख़ारा" का सफ़र इख़्तियार किया, इस्नाए राह (या'नी रास्ते में) सुवारी से गिर पड़ा, **टांग** पर शदीद चोट लगी, "बुख़ारा" पहुंच कर काफ़ी इलाज किया मगर तक्लीफ़ न गई बिल आख़िर टांग **कटवानी पड़ी**। (और यूं मां की बद दुआ़ रंग लाई) (حیاۃ الحیوان الکبری،2/163)

मां बाप की मह़ब्बत के औलाद पर त़िब्बी असरात

वालिदैन की **अहम्मिय्यत** को कौन नहीं जानता, इस्लाम ने हमें मां बाप को ख़ुश रखने और उन की नाराज़ी से बाज़ रहने का हुक्म दिया है यक़ीनन इस में हमारे लिये दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हैं। ग़ैर मुस्लिम साइन्स दानों ने भी मां बाप के तअ़ल्लुक़ से अ़जीबो ग़रीब

तह़क़ीक़ात की हैं : चुनान्चे डोक्टर निकल्सन डेवीज़ (DR. NICHOLSON DEVIS) और प्रोफ़ेसर मिस्लन केम (PROF. MISLON CAM) की रपोर्ट का खुलासा है : मां बाप को जूं जूं बुढ़ापा आता है उन को औलाद से **मह़ब्बत** बढ़ती चली जाती है और इस **मह़ब्बत** के सबब वालिदैन की आंखों के अन्दर रोशनी की एक मख़्सूस शक्ल पैदा होती है जो कि औलाद के ह़क़ में सिह़्ह़त का सबब बनती है ! मां बाप चाहे हज़ारों मील दूर हों (मगर औलाद से खुश हों तो) उन की हमदर्दियों और भली तमन्नाओं के ज़रीए़ ग़ैर मरई (या'नी नज़र न आने वाली) शुआ़ओं का सिल्सिला औलाद तक पहुंचता रहता है, वालिदैन बीमार हों तब भी उन की ग़ैर मरई शुआ़एं कमज़ोर नहीं होतीं उन की कुव्वत बराबर बढ़ती रहती है। मां बाप अगर क़रीब हों तो उन की **मह़ब्बतों** भरी ग़ैर मरई शुआ़एं जिस्म और आ'साब (या'नी वोह बारीक सफ़ेद रेशे जो दिमाग़ और ह़राम मग़्ज़ से निकल कर तमाम बदन में फैले हुए हैं उन) को तक़्विय्यत पहुंचाते और उन को लचक दार या'नी नर्म व मुलायम रखते हैं। वालिदैन का छूना नफ़्सियाती बीमारियों और जेह़नी उल्झनों को दूर करता है। एक साइन्स दान अपना तजरिबा बयान करते हुए लिखता है : "मैं जब भी अपनी मां से **मह़ब्बत** भरी निगाहें मिलाता हूं मेरे अन्दर सुकून की लहर दौड़ जाती है।" ख़ैर येह ग़ैर मुस्लिमों की तह़क़ीक़ात हैं, हमें दुन्यवी मफ़ादात के लिये नहीं **खुदा व मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात की बजा आवरी की निय्यत से वालिदैन की इत़ाअ़त करनी चाहिये। اَلْحَمْدُلِلّٰه मुसल्मान तो फिर भी मां बाप की ख़िदमत करते हैं ग़ैर मुस्लिमों के यहां तो बूढ़े मां बाप की बहुत ज़ियादा ना क़दरी है, इसे इस वाक़िए़ से समझने की सई कीजिये :

ओल्ड हाउस और एक लाचार बुढ़िया

इंग्लैंन्ड के एक जरीदे में कुछ इस त़रह़ का सनसनी खे़ज़ क़िस्सा लिखा था, एक मां की एक ही इक्लौती बेटी "मैरी" MARY के इ़लावा कोई औलाद नहीं थी, "मैरी" जब जवान हुई तो मां ने एक खाते पीते और समाजी त़ौर पर मुअ़ज़्ज़ज़ नौ जवान से उस की शादी कर दी। और खु़द भी उन्हीं के साथ मुक़ीम हो गई। उन के यहां एक चांद सी मुन्नी पैदा हुई, उस का नाम **एलीज़ाबेथ** (ELIZABETH) रखा गया, नानी को गोया एक खिलौना मिल गया, नवासी **एलीज़ाबेथ** उस के साथ खू़ब हिल गई, वक़्त गुज़रता गया इधर **एलीज़ाबेथ** बड़ी होती जा रही थी तो उधर नानी बुढ़ापे की त़रफ़ रवां दवां थी। अब नन्ही **एलीज़ाबेथ** इतनी संभल गई थी कि अपने कपड़े वग़ैरा खु़द तब्दील कर लेती थी। "मैरी" ने सोचा मां अब बूढ़ी हो चुकी है, मेहमान वग़ैरा आते हैं तो उन में येह जचती नहीं है, लिहाज़ा उस ने मां को बूढ़ों के खु़सूसी घर या'नी ओल्ड हाउस (OLD HOUSE) में दाखि़ल करवा दिया, मां ने बहुत एह़तिजाज किया, घर में अपनी ज़रूरत का एह़सास दिलाया, नवासी **एलीज़ाबेथ** की परवरिश का उ़ज़्र किया, मगर उस की एक न चली। **एलीज़ाबेथ** को भी नानी से प्यार हो गया था, उस ने भी नानी की बहुत ह़िमायत की मगर उस की भी शिनवाई न हुई। "मैरी" ह़ीले बहाने करती रही कि मकान में तंगी हो रही है, आप बे फ़िक्र रहें हम वक़्तन फ़ वक़्तन ओल्ड हाउस मिलने आया करेंगे, हफ़्ता इतवार (दो दिन) घर पर भी लाया करेंगे, भला ओल्ड हाउस में जाने से कोई रिश्ते भी टूटते हैं! शुरूअ़ शुरूअ़ में "मैरी" ने मां से मुलाक़ातें भी कीं मगर रफ़्ता

रफ़्ता इस में फ़ासिले बढ़ते गए। और बिल आख़िर "इन्तिज़ार" बुढ़िया का मुक़द्दर बन गया। वोह **मह़ब्बत** भरे लम्बे लम्बे ख़त़ तय्यार करती, नवासी **एलीज़ाबेथ** को प्यार लिखती मगर कोई ख़ास फ़र्क़ न पड़ा। एक बार ख़त़ में बेटी ने लिखा कि अब की बार क्रिस्मस (CHRISTMAS) की अगली रात मैं आप को लेने आऊंगी, घर चलेंगे। बुढ़िया की ख़ुशी की इन्तिहा न रही, उस ने ऊन (WOOL) से अपनी प्यारी नवासी के लिये स्वेटर वग़ैरा बुना ताकि उसे तोह़फ़े में दे। 24 दिसम्बर को रात सख़्त बर्फ़बारी थी "मैरी" ने लेने के लिये आना था इस लिये वोह अपना "तोह़फ़ए मह़ब्बत" लिये इन्तिज़ार में बिल्डिंग की बालकोनी में बैठी बे क़रारी के साथ सड़क पर आने जाने वाली हर गाड़ी को ग़ौर से देख रही थी, कि देखो "मैरी" की गाड़ी कब आती है! ओल्ड हाउस की एक ख़ादिमा लड़की "नेन्सी" (NENSI) को बुढ़िया की बे क़रारी देख कर बड़ा तर्स आ रहा था उस ने हीटर वाले कमरे में चलने के लिये बहुत इसरार किया मगर बुढ़िया न मानी। नेन्सी ने एक गर्म शाल ला कर उसे उढ़ा दी और हमदर्दी के साथ बार बार गर्मा गर्म चाय पेश करती रही, बुढ़िया ने सख़्त सर्दी के अन्दर ठिठरते ठिठरते इन्तिज़ार में सारी रात जाग कर गुज़ार दी मगर बेटी ने न आना था न आई। शदीद सर्दी की वज्ह से बुढ़िया को सख़्त **नमोनिया** हो गया, जो कि सर्दी लगने, खांसी हो जाने और गला ख़राब होने से लाह़िक़ होता है, इस में फेफड़े के किसी ह़िस्से में सूजन हो जाती है, जिस से वहां हवा नहीं जा सकती और मरीज़ को सांस लेने में

सख़्त तक्लीफ़ होती है और इस का दरजए ह़रारत (या'नी बुख़ार) 105 डिग्री तक बढ़ जाता है। इस बीमारी की ताब न लाते हुए बुढ़िया ने दम तोड़ दिया। कुछ दिन बा'द "मैरी" अपनी मां का सामान लेने ओल्ड हाउस आई, उस ने वहां की ख़ादिमा नेन्सी का बहुत शुक्रिया अदा किया क्यूं कि वोह आख़िरी वक़्त तक उस की बूढ़ी मां की ख़िदमत करती रही थी, चूंकि नेन्सी अभी जवान थी और काफ़ी ख़िदमत गुज़ार भी, इस लिये "मैरी" ने बेहतर तनख़्वाह का लालच दे कर उसे अपने घर ख़िदमत गारी के काम के लिये चलने की ऑफ़र की। "नेन्सी" ने चोट करते हुए कहा : आप के घर ज़रूर आऊंगी, मगर अभी नहीं, जिस दिन आप की बेटी "**एलीज़ाबेथ**" आप को यहां ओल्ड हाउस में छोड़ जाएगी, मैं उस के साथ उस की ख़िदमत के लिये चली जाऊंगी।

ओल्ड हाउस के मुक़ीम दो बुज़ुर्गों की फ़रियाद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह तो एक ग़ैर मुस्लिम ख़ानदान का वाक़िआ़ था, इसे सुन कर आप को शायद कुछ अ़जीब सा मह़सूस हो रहा होगा। ग़ैर इस्लामी मुमालिक में ब कसरत ओल्ड हाउस हैं और अफ़्सोस अब उन की देखा देखी इस्लामी मुल्कों में भी इस का आग़ाज़ हो चुका है ! किसी ओल्ड हाउस में मुक़ीम दो निहायत कमज़ोर बुज़ुर्गों ने इस्लामी भाइयों से **निहायत ग़मगीन** लहजे में अपना दर्द बयान किया और ओल्ड हाउस में छोड़ कर **चले जाने** पर अपने अ़ज़ीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ निहायत **तअस्सुफ़** व ह़सरत का इज़्हार किया और कहा कि हमारी आरज़ू है कि हमारे ख़ानदान वाले हमें घर वापस ले चलें हम यहां काफ़ी दुखी हैं।

हाए ! हाए ! वोह औलाद कितनी एह्सान फ़रामोश और ना ख़लफ़ व ना लाइक़ है जो बचपन में मां बाप की त़रफ़ से किये जाने वाले तमाम एह्सानात को फ़रामोश कर के बुढ़ापे में उन्हें ठुकरा देती है। ह़ालां कि बुढ़ापे में तो बेचारों को हमदर्दियों की ज़ियादा ह़ाजत होती है। इस्लामी भाइयो ! आप अ़ह्द कीजिये कि चाहे कुछ भी हो जाए मां बाप को उ़म्र भर निभाएंगे और उन की ख़िदमत कर के ख़ुद को जन्नत का ह़क़दार बनाएंगे। اِنْ شَآءَاللہ । यक़ीन मानिये **वालिदैन** के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं और उन से सुबुक दोश (या'नी बरिय्युज़्ज़िम्मा) होना मुम्किन ही नहीं चुनान्चे

मां को कन्धों पर उठाए गर्म पथ्थरों पर छे मील......

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने बारगाहे नबवी में अ़र्ज़ की : एक राह में ऐसे गर्म पथ्थर थे कि अगर गोश्त का टुकड़ा उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता ! मैं अपनी मां को गरदन पर सुवार कर के छे मील तक ले गया हूं, क्या मैं मां के हुक़ूक़ से फ़ारिग़ हो गया हूं ? सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे पैदा होने में दर्द के जिस क़दर झटके उस ने उठाए हैं शायद येह उन में से एक झटके का बदला हो सके। (معجم صغیر،ج:1،ص92،حدیث:257)

ह़म्ल की तकालीफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मां ने अपने बच्चे के लिये सख़्त तक्लीफ़ें उठाई होती हैं, दर्दे ज़ेह या'नी बच्चे की विलादत (DELIVERY) के वक़्त होने वाले दर्द को मां ही समझ सकती है, मर्द के लिये किस क़दर आसानी है कि उसे डिलिवरी नहीं होती। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** (जिल्द 27) सफ़ह़ा 101 पर फ़रमाते हैं : मर्द का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ लज़्ज़त का है और औ़रत को सदहा मसाइब का सामना है, नव महीने पेट में रखती है कि चलना फिरना, उठना, बैठना दुश्वार होता है, फिर पैदा होते वक़्त तो हर झटके पर मौत का पूरा सामना होता है, फिर अक़्साम अक़्साम के दर्द में निफ़ास वाली (या'नी विलादत के बा'द आने वाले ख़ून की तक्लीफ़ में मुब्तला होने वाली) की नींद उड़ जाती है। इसी लिये (**अल्लाह** तबारक व तआ़ला) फ़रमाता है :

حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًاؕ وَ حَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًاؕ
(پ26،الاحقاف:15)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस की मां ने उसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी उस को तक्लीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है।

तो हर बच्चे की पैदाइश में औ़रत को कम अज़ कम तीन बरस बा मशक़्क़त जेलख़ाना है। (फ़तावा रज़विय्या, 27/101)

ड्राइवर की जान बच गई

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतें सीखने सिखाने, इन पर अ़मल बढ़ाने, अपने आप को सुन्नतों का पैकर बनाने और नेकी की दा'वत की ख़ूब धूमें मचाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आ'माल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "जाएज़ा" कर के नेक आ'माल का

रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के ह़ुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **मदनी बहार** सुनाऊं चुनान्चे एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िय्या बयान का ख़ुलासा है कि उन के एक भाई जो कि अ़रब शरीफ़ के शहर "रियाज़" में ब हैसिय्यत ड्राइवर मुलाज़मत कर रहे थे। एक दिन ड्राइविंग के दौरान ख़त़रनाक ह़ादिसा हुवा और वोह बेहोश हो गए। दिमाग़ी चोटें इतनी ज़ियादा थीं कि बचने की उम्मीद न रही। येह लोग मजबूर थे उन को देखने भी न जा सकते थे। اَلْحَمْدُلِلّٰہ वोह आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत किया करती थी। उन्हों ने भाईजान वाली परेशानी अपने अ़लाक़े की एक इस्लामी बहन को बताई। उन्हों ने दिलासा दिया और मश्वरा दिया कि इसी त़रह़ पाबन्दी से इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर के ख़ूब **दुआ़** किया करो। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ इज्तिमाअ़ में की जाने वाली **दुआ़ओं** की बरकत से तीन माह के अन्दर अन्दर भाईजान ने बातचीत शुरूअ़ कर दी। डॉक्टर भी ह़ैरान रह गए क्यूंकि **दिमाग़ी चोटें** बहुत ज़ियादा थीं और ब ज़ाहिर बचने की उम्मीद बहुत कम थी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ

इज्तिमाआ़त की बरकात पर उन की अ़क़ीदत और ज़ियादा मज़्बूत़ हुई।

ऐ इस्लामी बहनो ! न मायूस होना तुम्हें ख़ैर देगा दिला दीनी माह़ोल
तू पर्दे के साथ इज्तिमाआ़त में आ तेरी देगा बिगड़ी बना दीनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علىٰ مُحَمَّد

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रह़मतों का नुज़ूल होता है

اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़एं ज़रूर रंग लाती हैं, ह़ज़रते इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصّٰلِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मते इलाही उतरती है। (حلیۃ الاولیاء،7/335،رقم:10750) जब नेक बन्दों के तज़्किरों पर रह़मतों का नुज़ूल होता है तो जिस इज्तिमाअ़ में **अल्लाह पाक और रसूल** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होता हो वहां रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी और जहां छमाछम रह़मतें बरस रही हों वहां दुआ़एं क्यूं क़बूल न होंगी। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** (743 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 422 पर है : ह़ज़रते अबू हुरैरा और ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि हम मक्के मदीने के सरदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर थे कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो क़ौम **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने के लिये बैठती है फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और रह़मत उन्हें ढांप लेती है और उन पर सकीना (या'नी सुकून) नाज़िल होता है और **अल्लाह** पाक अपने फ़िरिश्तों के सामने उन का चरचा फ़रमाता है।" (مسلم،ص1448،حدیث:2700)

ज़िक्र किसे कहते हैं ?

"**अल्लाह हू**" और "**ह़क़ हू**" की ज़र्बें लगाना बेशक ज़िक्र ही है। ताहम तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ़, दुरूदो सलाम, ना'त व मन्क़बत, ख़ुत़्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा भी "**ज़िक्रुल्लाह**" में शामिल हैं। लिहाज़ा **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त भी ज़िक्र के ह़ल्क़े हैं।

सारे आ़लम को है तेरी ही जुस्त्जू   जिन्नो इन्सो मलक को तेरी आरज़ू
याद में तेरी हर एक है सू ब सू   बन में वह़्शी लगाते हैं ज़र्बाते हू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा, हमें अपनी और अपने प्यारे ह़बीब की मह़ब्बत पर ज़िन्दा रख, जब तक जियें सुन्नतों पर अ़मल करते रहें और मरें तो मदीने की सर ज़मीन, गुम्बदे ख़ज़्रा का साया, निगाहों के सामने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वा और लब पर येह कलिमए त़य्यिबा हो (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه । **जन्नतुल बक़ीअ़** में तदफ़ीन हो और **जन्नतुल फ़िरदौस** में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस मिले। اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النّبِيّين صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

या ख़ुदा जिस्म में जब तक कि मेरी जान रहे   तुझ पे सदक़े तेरे मह़बूब पे क़ुरबान रहे
कुछ रहे या न रहे पर येह दुआ़ है कि अमीर   नज़्अ़ के वक़्त सलामत मेरा ईमान रहे

اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النّبِيّين صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

वालिदैन से हुस्ने सुलूक का इन्आ़म

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो दराज़िये उ़म्र और फ़राख़िये रिज़्क़ की तमन्ना रखता हो उसे चाहिये कि वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक और सिलए रेह़मी करे। (مسند امام احمد، 4/458، حدیث: 13400)